3 ऐसी थी कमला नेहरू

प्रस्तावना — एक लड़की का 'मेरी माँ' विषय पर बोलना कितना कठिन है। मन में हजारों तस्वीरें आती हैं, कौन-सी सामने रखूँ क्योंकि माँ एक शब्द ही नहीं, बल्कि ममता और वात्सल्य का अथाह सागर है।

प्रतिबिंब — इस पाठ में इंदिरा गाँधी ने अपनी माँ के जीवन से जुड़ी कुछ अविस्मरणीय बातों का उल्लेख किया है।

परिकल्पना — उनके जीवन की प्रत्येक घटना से मिलने वाली प्रेरणा को उन्होंने अपने लिए आदर्श बना लिया क्योंकि बचपन के संस्कार हमारे सम्पूर्ण जीवन पर एक अमिट छाप छोड़ देते हैं।

इंदिरा गाँधी कहती हैं कि अपनी माँ के बारे में कुछ खास तो बता नहीं सकती क्योंकि हमारी ज़िन्दगी तो जनता के सामने खुली किताब की तरह है और आप सब लोग उससे परिचित ही होंगे।

यह बात उस समय की है जब गाँधी जी हिन्दुस्तान में थे और सत्याग्रह, स्वदेशी और खादी जैसे इंकलाबी ख्याल पैदा हुए ही थे। इनका असर मेरे पिता जी और दादाजी पर ज़्यादा पड़ा। दावतों को बंद कर दिया, चौराहे पर खूब चमकती रंग-बिरंगी पोशाकों के गट्ठर जला दिये गए। मखमल, साटिन इत्यादि उतार दिये गए। खादी पहननी शुरू कर दी गई। वह खादी जो कि खुरदरी और टाट जैसी मोटी। मेरी माँ का सारा शरीर छिल जाता था, लेकिन इस पोशाक में भी वह बेहद खूबसूरत लगती थीं। ज़ेवर आदि का उनको बिल्कुल शौक नहीं था। बचपन में वह अपने भाइयों के साथ खेलती थीं क्योंकि उनकी बहन उनसे बहुत छोटी थी। इस आदत से उनको एक दफ़ा काफ़ी परेशानी उठानी पड़ी। जब वे नौ या दस साल की थीं तो कुछ समय के लिए सारा परिवार जयपुर गया। वहाँ पर्दे का सख्त प्रचलन था और कमला जी को कहा गया कि वे केवल डोली में बैठकर ही बाहर जा सकेंगी। पूरी आज़ादी से रहने वाली कमला जी अब कैद में कैसे रहतीं सो उनका वजन दिन-ब-दिन घटने लगा और चेहरा उतरने लगा तो मेरी नानी को चिन्ता होने लगी। तभी उन्हें एक तरकीब सूझी। उन्होंने अपनी पुत्री को सलाह दी कि वह रोज सुबह अपने भाई के कपड़े पहनकर और बालों को पगड़ी में छुपाकर भाइयों के साथ घूमने जायें। कमला जी उस दिन से ऐसा ही करने लगीं और किसी को पता भी नहीं चला लेकिन उनके दिमाग पर इस बात का भारी असर पड़ा और वह सदैव पर्दे के विरुद्ध प्रचार करती रहीं।

सन् 1930 में जब वह कांग्रेस वालंटियर बनी थीं तब भी उन्होंने मर्दों का लिबास पहना था। मुझे भी वे बचपन में अक्सर लड़कों के कपड़े पहनाती थीं। इससे लोगों को बड़ी परेशानी होती थी। वे भ्रमित हो जाते थे, अक्सर मुझसे पूछते थे - 'तुम्हारा भाई कहाँ है?' जब मैं जवाब देती कि मेरा कोई भाई नहीं है तो वे सहज विश्वास ही नहीं करते थे। वे कहते, "वाह! हमने अपनी आँखों से उसे देखा है।" 17 वर्ष की उम्र में जब वे माता-पिता के घर को छोड़कर आनन्द भवन में आईं तो उनको क्या मालूम था कि किस लम्बे और दुःख भरे मार्ग पर चलना होगा। तब मेरे दादाजी की

Scanned by CamScanner

वकालत खूब चल रही थी। उनकी गिनती प्रांत के सबसे बड़े आदमियों में होती थी। मेरे दादाजी बड़े दिल और दिमाग वाले व्यक्ति थे। शौकीन तबीयत के, खूब कमाते थे और खूब खर्चा भी करते थे। हमारा घर हमेशा बड़े-बड़े अफसरों, लेखकों, कवियों, अंग्रेजों और हिन्दुस्तानी मेहमानों से भरा ही रहता था। रोज दावतें होती थीं और दादाजी की खुशी से घर गूँज उठता था। घर के एक हिस्से में अंग्रेजी तरीके के बैठने और खाने के कमरे थे, दूसरे हिस्से में देसी तरीके के। रोज दोनों तरह के खाने बनते। मेरी फूफी की मेट्रन और हमारा ड्राईवर भी एक अंग्रेज ही था।

मेरी दादी भी विलायत घूम आई थीं। घर की संभाल और मेहमाननवाजी का बोझ अधिकतर माँ पर था। नये तरीके सीख ही रही थी कि उनकी जिन्दगी एकदम पलट गई और सारा परिवार जोरों से कांग्रेस आन्दोलन में भाग लेने लगा। जेल की यात्राएँ तथा अनेक कठिनाइयाँ शुरू हो गईं। गाँधी जी ने खास तौर पर स्त्रियों को पुकारा कि वे भी बाहर निकलें और काम का बोझ उठाने में अपने भाइयों की सहायता करें। माँ ने अपने उत्साह और हिम्मत से भी गाँधी जी पर कुछ असर डाला था। माँ अपने बचपन का प्रण नहीं भूली थीं। जीवनभर गाँधी जी के साथ जहाँ जातीं, औरतों को पर्दे से निकालने का प्रयत्न करतीं और समझातीं कि अपने अधिकारों के लिए कैसे लड़ें? उनके कहने से हजारों औरतें कांग्रेस में काम करने लगीं।

धीरे-धीरे माँ को बीमारी ने घेरना शुरू कर दिया। तब भी वे वालंटियर बनी और काम करती रहीं। बाद में जब नेता गिरफ्तार होने लगे तब तो वे और जोरों से काम में जुट गईं और इलाहाबाद सहित पूरे जिले का संगठन अपने ऊपर इस बल और दृढ़ता से उठाया कि सब दंग रह गए। चारों ओर उनकी योग्यता की प्रशंसा होने लगी। उनके पति जवाहर लाल और ससुर मोतीलाल नेहरू जी तो फूले नहीं समाए। लेकिन सबको उनकी सेहत की चिन्ता थी। वे किसी की भी नहीं सुनती थीं। सन् 1930 में वे कार्यकारिणी की सदस्या बन गईं और थोड़े ही दिन बाद उनकी गिरफ्तारी हो गई। गिरफ्तारी की खबर रात को ही मिलने के कारण हम लोग सारी रात जागते रहे। ऐसे मौके पर भी उनको दूसरों का ही ख्याल आता था। जो काम अधूरे रह गए थे, उन्हें पूरा करने की कोशिश कर रही थीं ताकि उनके जाने के बाद किसी को परेशानी न हो। कहते हैं जब दुःख और पीड़ा इंसान पर पड़ती है तभी उसका चेहरा दिखाई देता है। जो कमजोर होते हैं, उनको दुःख तोड़कर दबा देता है लेकिन जो बहादुर होते हैं, वे उस दुःख से सीख लेकर आगे बढ़ते जाते हैं और उनमें छिपी ताकत और स्वाभाविक सौंदर्य चमक उठता है, ऐसी ही थीं कमला जी।

वे न तो कभी ऊँची आवाज में बोलती थीं, न ही डाँटती थीं लेकिन उनका प्रभाव ऐसा था कि वे जो कहती थीं, वही होता था। हमारे यहाँ पण्डित मदनमोहन मालवीय जी के भतीजे संस्कृत पढ़ाने आते थे। वे माँ का आदर भी बहुत करते थे और उनसे डरते भी थे। मुझे आश्चर्य होता था कि इतनी मधुर, दुबली-पतली औरत से डर कैसा? पंडित जी

Scanned by CamScanner

कहते, "अरे ! तुम्हें नहीं मालूम, वे बड़ी शक्ति की देवी हैं, जो चाहे कर सकती हैं।" इस पर माँ हमेशा हँसती थी। परन्तु वास्तव में उनमें कोई शक्ति तो ऐसी थी जो हर किसी के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ती थी। पं. जवाहर लाल नेहरू जी भी उनके विचारों से बहुत प्रभावित थे।

वे इस बात से चिढ़ती थीं कि लोग ऊपर से तो ईश्वर का नाम लेते हैं लेकिन विचारों में उधेड़-बुन में ही पड़े रहते हैं। उन्हें दिखावटी धर्म की जरूरत होती है। वे मन्दिर जाना भी इसी वजह से पसन्द नहीं करती थीं। लेकिन उनकी भक्ति बहुत गहरी थी। वे रोज़ हम लोगों से गीता और रामायण का पाठ करवाती थीं। जैसे-जैसे उनकी उम्र बढ़ती गई उनकी यह भक्ति और अन्दर की शक्ति भी बढ़ती गई। बाद में वह नदी के किनारे बैठकर घंटो समाधि में बैठी रहती थीं। गरीबों की पढ़ाई और बेहतरी में वे खासतौर पर दिलचस्पी लेती थीं। जब 1928 में मेरे दादा ने अपने बड़े घर को कांग्रेस को दान कर दिया और उसका नाम 'स्वराज्य भवन' रख दिया तो माँ ने उसके एक हिस्से में अस्पताल खोला। 37 वर्ष की उम्र में घर और प्यारे देश से हजारों मील दूर उनका देहान्त हो गया। अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक वे मुसकराती रहीं और हम सबको साहस देती रहीं। उनकी अन्तिम इच्छा यही थी कि उनका अस्पताल बंद न हो। इस इच्छा को पूरा करने के लिए महात्मा गाँधी, पंडित मदनमोहन मालवीय और अन्य नेताओं ने इस स्मारक के नाम से इलाहाबाद में स्त्रियों के लिए अस्पताल खोल दिया। गाँधी जी के हाथों उसका उद्घाटन हुआ। जैसी सेवा वे अपने जीवन में करती थीं वैसे ही उनके नाम से अब भी हो रही है।

शिक्षण संकेत – कक्षा में बच्चों को सेवा-भाव के लिए प्रेरित कीजिए और उनको कुछ महान व्यक्तियों के बारे में बताइए कि कैसे उन्होंने अपना जीवन दूसरों की सेवा में समर्पित कर दिया।

पढ़िए और लिखिए – हिंदुस्तान, सत्याग्रह, स्वदेशी, इंकलाब, ख्याल, गट्ठर, वालंटियर, आंदोलन, उधेड़-बुन, अंदरूनी।

शब्दार्थ :– **परिचय** – जानना (introduce), **सत्याग्रह** – सत्य के लिए आग्रह (insistence on true demand), **इंकलाबी** – क्रांतिकारी (freedom fighter), **ख्याल** – विचार (thought), **सख्त** – कड़ा (hard), **आजादी** – स्वतंत्रता (freedom), **तरकीब** – उपाय (Idea) **वालंटियर** – स्वयंसेवक (volunteer), **गिरफ़्तार** – पकड़ लेना (arrest), **स्वाभाविक सौंदर्य** – प्राकृतिक सुंदरता (natural beauty), **प्रभावित** – असर होना (impress), **देहान्त** – मृत्यु (death), **लिबास** – पोशाक (dress), **उद्घाटन** – किसी संस्था को पहली बार खोलना (inauguration).

वर्तनी वैभिन्य – जिंदगी -जिन्दगी, हिंदुस्तान -हिन्दुस्तान, लंबे -लम्बे, आंदोलन-आन्दोलन, सौंदर्य-सौन्दर्य, मंदिर -मन्दिर, देहांत - देहान्त, अंतिम - अन्तिम, बंद - बन्द, परंतु - परन्तु, घंटों - घन्टों, चिंता - चिन्ता, अंदरूनी - अन्दरूनी, पसंद - पसन्द।

Scanned by CamScanner

संकलित मूल्यांकन

ख दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. इंदिरा गाँधी ने किस समय की बातें बताई हैं ?
2. इंकलाबी ख्यालों का क्या-क्या असर हुआ ?
3. कमला जी ने मर्दों का लिबास क्यों पहना ?
4. कमला जी को क्या-क्या नापसंद था ?
5. कमला नेहरू की गिरफ्तारी क्यों हुई ?

बहु विकल्पीय प्रश्न

ग सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए –

1. कमला जी कैसी खादी पहनती थी?
   (अ) खुरदरी ◯ (ब) टाट जैसी मोटी ◯ (स) दोनों ◯ (द) चिकनी
2. वे कांग्रेस की वालंटियर कब बनी थीं ?
   (अ) सन् 1931 में ◯ (ब) सन् 1930 में ◯ (स) सन् 1932 में ◯ (द) सन् 1929 में
3. पंडित मदन मोहन मालवीय के भतीजे क्या पढ़ाते थे?
   (अ) हिन्दी ◯ (ब) अंग्रेज़ी ◯ (स) संस्कृत ◯ (द) गणित
4. किस उम्र में कमला नेहरू आनन्द भवन आई थीं ?
   (अ) 18 वें वर्ष में ◯ (ब) 17 वें वर्ष में ◯ (स) 19 वें वर्ष में ◯ (द) 20 वें वर्ष में
5. गाँधी जी ने खासतौर पर किसको पुकारा?
   (अ) नौजवानों को ◯ (ब) स्त्रियों को ◯ (स) बच्चों को ◯ (द) बुजुर्गों को

Scanned by CamScanner

अभ्यास-प्र

रचनात्मक मूल्यांकन

क सोचिए और बताइए –

1. लेखिका के पिता और दादा पर किसका प्रभाव पड़ा?
2. जयपुर में कौनसी प्रथा थी?
3. कमला जी के पति का नाम क्या था?
4. आनंद भवन कहाँ पर स्थित है?

Scanned by CamScanner

पाठ - 3

ऐसी थी कमला नेहरू

प्रश्न / उत्तर

(क) सोचिए और बताइए -

उ० 1 लेखिका के पिता और दादा पर गाँधी जी का प्रभाव पड़ा।

उ० 2 जयपुर में 'पर्दा-प्रथा' थी।

उ० 3 कमला जी के पिता का नाम "श्री जवाहर लाल नेहरू" था।

उ० 4 आनंद भवन "इलाहाबाद" में स्थित है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :-

उ० 1 इंदिरा गाँधी ने इस पाठ में उस समय की बात बताई है जब गाँधी जी हिंदुस्तान में थे और सत्याग्रह, स्वदेशी और खादी जैसे ख्याल पैदा हुए ही थे।

उ० 2 इंकलाबी ख्यालों का असर रहा कि दावतों को बंद कर दिया गया, चौराहों पर खूब चमकती रंग-बिरंगी पोशाकों के गट्ठर जला दिये गए। मखमल, साटिन आदि उतार दिए गए और खादी पहननी शुरू कर दी गई।

उ० 3 कमला जी का जब पूरा परिवार जयपुर आ गया तो वहां पर्दे का सख्त प्रचलन थी। कमला जी आजाद रहने वालों में से थी। तो उनकी माँ ने उन्हें सलाह दी कि वह अपने भाईयों के कपड़े व पगड़ी पहनकर बाहर जाए।
तथा दूसरा जब वह कांग्रेस वालंटियर बनी थी तब भी उन्होंने मर्दों का लिबास पहना था।

Scanned by CamScanner

उ०4 कमला जी को इस बात से चिढ़ थी कि लोग ऊपर से तो ईश्वर का नाम लेते है लेकिन विचारों ~~का~~ में उधेड़-बुन में ही पड़े रहते है। उन्हें दिखावटी धर्म की जरूरत होती है। वे मान्दिर जाना भी इसी वजह से पसंद नहीं करती थी।

उ०5 कमला जी जीवनभर गाँधी जी के साथ जहाँ जाती वहाँ औरतों को घर से निकलने के लिए प्रेरित करती। बाद में जब आंदोलन उग्र होने लगे तब नेता गिरफ्तार होने लगे तब वे और जोरों से वालंटियर बन अपने काम में लग गई। इलाहाबाद सहित पूरे जिले का संगठन अपने ऊपर ले लिया। जब वे कॉंग्रेस की कार्यकारिणी की सदस्या बन गई तब उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

Scanned by CamScanner